प्रदीप

देशभक्ति गीतों के रचयिता रामचंद्र द्विवेदी उर्फ प्रदीप का जन्म 6 फरवरी, 1915 ई. को मध्य प्रदेश में हुआ था। बचपन से ही आपको कविता लिखने का शौक था। 1939 ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप शिक्षक बनना चाहते थे। पर, भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। उसी समय मुंबई में हो रहे एक कवि सम्मेलन में भाग लेने का मोह आप छोड़ नहीं सके। आपकी कविताओं से प्रभावित होकर बॉम्बे टॉकिज के मालिक हिमांशु राय ने आपको **कंगन** फिल्म के लिए गीत लिखने की पेशकश की। 1939 ई. में प्रदर्शित इस फिल्म के गीत जबर्दस्त हिट हुए। 1940 ई. में ज्ञान मुखर्जी के निर्देशन में आपने **बंधन** फिल्म के गीत लिखे। फिर आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपने बॉम्बे टॉकिज के बैनर तले **नया संसार, अंजान, झूला, पुनर्मिलन, किस्मत** आदि कई हिट फिल्मों के गीत लिखे।

आप **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नेशनल इंटीग्रेशन अवार्ड, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, फिल्म जर्नलिस्ट अवार्ड, इम्पा अवार्ड, महान कलाकार का पुरस्कार, राजीव गांधी अवार्ड** तथा **संत ज्ञानेश्वर** जैसे अनेक पुरस्कारों से नवाजे गए हैं।

11 दिसंबर 1998 ई. को भारत का यह महान गीतकार इस संसार से विदा हो गये। प्रदीप आज हमारे बीच नहीं हैं, पर उनके द्वारा लिखे गीत आज भी देशवासियों के दिलोंदिमाग में देशभक्ति का जज्बा बुलंद कर रहे हैं। उनके गीतों में प्रवाह है, ओज है। भाषा शैली सरल-सहज एवं गीतों के भाव अत्यंत स्पष्ट हैं।

साबरमती के संत *कवि एवं गीतकार प्रदीप का बहुचर्चित गीत है। इसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवनादर्शों पर प्रकाश डाला गया है। गांधी जी विलक्षण प्रतिभा के धनी महापुरुष थे। वे ऐसे अनोखे संत थे, जिन्होंने बिना हथियार और गोला-बारुद के ही देश को विदेशी शासन के चंगुल से मुक्त करा लिया। यह स्वाधीनता भारतवासियों के लिए एक चमत्कार था और यह चमत्कार साबरमती के महान संत गांधी जी ने कर दिखाया। भारत से अंग्रेजों को भगाना बड़ा कठिन कार्य था, परन्तु गांधीजी ने इस कार्य को बड़ी आसानी से किया। उनमें गजब की संगठन शक्ति थी। शरीर में मात्र धोती लपेटे और हाथ में लाठी लेकर जिधर से गुजरते, लाखों मजदूर, किसान, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, पठान सभी उनके पीछे चल पड़ते थे। सत्य और अहिंसा ही उनका एकमात्र अस्त्र था, जिसके बल पर शक्तिशाली अंग्रेजी जाति से उन्होंने टक्कर ली थी। उनके प्रयास से देश आजाद हुआ, पर उन्होंने नवगठित सरकार में कोई भी पद ग्रहण नहीं किया। उन्होंने खुद कष्ट झेला, पर देशवासियों को स्वाधीनता-रूपी अमृत प्रदान किया। उन्होंने पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया है।*

साबरमती के संत

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
आंधी में जलती रहे गांधी तेरी मशाल, साबरमती के संत ...।

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम
घर ही पे लड़ी तूने अजब की लड़ाई
दागा न कहीं तोप न बन्दूक चलाई
दुश्मन के किले पर भी न की तूने चढ़ाई
वाह रे फकीर खूब करामात दिखाई
चुटकी में दिया दुश्मनों को देश से निकाल, साबरमती के संत...।

शतरंज बिछाकर बैठा था यहीं पे जमाना
लगता था मुश्किल है फिरंगी को हटाना
टक्कर था बड़े जोर का दुश्मन भी था जाना
पर तू भी था बापू बड़ा उस्ताद पुराना
मारा वो दाव कसके उल्टी भी न चली चाल, साबरमती के संत ...।

जब-जब तेरी बिगुल बजी जवान चल पड़े
मजदूर चल पड़े किसान चल पड़े
हिन्दू, मुसलमान, सिख, पठान चल पड़े
कदम पे तेरा कोटि-कोटि प्राण चल पड़े
फूलों के सेज छोड़ के दौड़े जवाहरलाल, साबरमती के संत ...।

मन थी अहिंसा की बदन पे थी लंगोटी
लाखों में लिए घुमता था सत्य की सोटी
वैसे तो देखने में भी हस्ती तेरी छोटी
सर देख के झुकती थी हिमालय की भी चोटी
दुनियां में तू बेजोड़ था इंसान बेमिशाल, साबरमती के संत ...।

जग में कोई जिया तो बापू ने ही जिया
तूने वतन की राह पर सब कुछ लूटा दिया
मांगा न तूने कोई तख्त बेताज ही रहा
अमृत दिया सभी को खुद जहर पिया
जिस दिन तेरी चिता जली रोया था महाकाल, साबरमती के संत ...।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

अ. सही विकल्प का चयन करो :

1. 'गांधी तेरी मशाल' का किस अर्थ में प्रयोग हुआ है ?
   (क) गांधी जी का दीप (ख) गांधी जी की तलवार
   (ग) गांधीजी का आश्रम (घ) गांधीजी का आदर्श
2. स्वाधीनता से पहले भारत पर किसका शासन था ?
   (क) अंग्रेजों का (ख) फ्रांसीसियों का
   (ग) डचों का (घ) पुर्तगालियों का
3. गांधी जी को प्यार से लोग क्या कहकर पुकारते थे ?
   (क) महात्मा (ख) बापू
   (ग) मोहन दास (घ) राष्ट्रपिता
4. गांधीजी के ऊँचा मस्तक के सामने किसकी चोटी भी झुकती थी ?
   (क) विध्यांचल की (ख) हिमालय की
   (ग) महाकाल की (घ) ताजमहल की

(आ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. 'साबरमती के संत' किसे कहा गया है ?
2. गांधीजी ने क्या कमाल कर दिखाया ?
3. महात्मा गांधी का वास्तविक हथियार क्या था ?
4. गांधीजी ने लोगों को किस मार्ग पर चलना सिखाया ?

(इ) संक्षिप्त उत्तर लिखो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. गांधीजी की संगठन शक्ति के बारे में तुम क्या जानते हो ?
2. गांधीजी ने किस प्रकार अंग्रेजों से टक्कर लिया था ?
3. प्रस्तुत गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखो।
4. 'साबरमती के संत' गीत के आधार पर गांधीजी के व्यक्तित्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

(ई) भावार्थ लिखो

(क) मन थी अहिंसा की बदन पे थी लंगोटी
लाखों में लिए घुमता था सत्य की सोटी।

(ख) माँगा न तूने कोई तख्त बेताज ही रहा
अमृत दिया सभी को खुद जहर पिया।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित मुहावरों/वाक्यांशों से वाक्य बनाओ :**
चुटकी में, बड़े जोर का टक्कर, पुराना उस्ताद, बिगुल बजाना, फूलों के सेज

2. **निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्द लिखो :**
अहिंसा, देश, सत्य, अमृत, पुराना, दुश्मन, आजादी, मुश्किल, गुरु, मिशाल

3. पठित कविता में प्रयुक्त **बेजोड़, बेमिशाल** और **बेताज** शब्द अरबी भाषा के शब्द हैं। तुम भी **बे** उपसर्ग लगाकर अन्य दस शब्द बनाओ।

योग्यता-विस्तार

1. भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी के योगदान पर एक परियोजना प्रस्तुत करो।

2. इतिहास में सत्य-अहिंसा एवं प्रेम का मार्ग दिखाने वाले अनेक महापुरुषों के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। उनमें से भगवान गौतम बुद्ध, पैगम्बर हजरत मुहम्मद और ईशा मसीह के जीवन एवं उपदेशों के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

3. पठित गीत का सीडी संग्रह कर सुनो और लय के साथ विद्यालय के किसी विशेष अवसर पर गाओ।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

खड्ग = तलवार
पतित = गिरा हुआ, पापी
पावन = पवित्र
अजब = अनोखा, विचित्र
करामत = चमत्कार
फिरंगी = अंग्रेज, विदेशी
उस्ताद = गुरु
बिगुल = युद्ध भूमि में बजाया जानेवाला एक वाद्य-यंत्र, युद्ध का शंखनाद
कोटि = करोड़
सोटी = लाठी
बेमिशाल = अतुलनीय
वतन = जन्मभूमि
बेताज = मुकुटहीन
सेज = बिस्तर, सय्या
आंधी में जलती रहे गांधी तेरी मशाल = संकट के समय भी गाँधी जी का आदर्श कायम रहे
साबरमती = गुजरात प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी। इसी नदी के तट पर गांधीजी का आश्रम था। इसे गांधी आश्रम, हरिजन आश्रम और सत्याग्रह आश्रम के नाम से भी जाना जाता है। इस आश्रम का ऐतिहासिक महत्व है। यहीं से गांधीजी ने अपने 78 साथियों को साथ लेकर 12 मार्च, 1930 ई. को **दांडी यात्रा** शुरू की थी और समुद्र किनारे पहुँचकर समुद्र के जल से स्वयं नमक बनाकर **नमक कानून** भंग किया था। साबरमती आश्रम आजकल 'गांधी संग्रहालय' के रूप में राष्ट्रीय धरोहर है।